16

fo".k|lglukeLrk=&V

प्रिय शिक्षार्थी, यह पाठ पूर्व पाठ के क्रम में ही है जिसमें आपने विष्णुस्रनामस्तोत्र के श्लोकों तथा उनके अर्थ के विषय में जाना है। इस पाठ में आप आगे के श्लोकों को पढेंगें।

mÌ';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- पढ़े गये श्लोकों का अर्थ समझ पानें में ।

d{kk & 5

fVIi.kh

16.1 fo".kq lglukeLrks= &V

/keZxqC/keZ—)eZh lnlR{kje{kje~ A
vfoKkrk lglzka'kqfo/kkrk —ry{k.k% AA ‡f AA

475	धर्मगुब्	धर्म का गोपन(रक्षा) करने वाले हैं
476	धर्मकृत्	धर्म की मर्यादा के अनुसार आचरण वाले हैं
477	धर्मी	धर्मों को धारण करने वाले हैं
478	सत्	सत्यस्वरूप परब्रह्म
479	असत्	प्रपंचरूप अपर ब्रह्म
480	क्षरम्	सर्व भूत
481	अक्षरम्	कूटस्थ
482	अविज्ञाता	वासना को न जानने वाला
483	सहस्रांशुः	जिनके तेज से प्रज्वल्लित होकर सूर्य तपता है
484	विधाता	समस्त भूतों और पर्वतों को धारण करने वाले
485	कृतलक्षणः	नित्यसिद्ध चौतन्यस्वरूप

xHkfLrusfe% lÙoLFk% flagks Hkwregs'oj% A
vkfnnsoks egknsoks nsos'kks nsoHkn~xq#% AA ‡„ AA

486	गभस्तिनेमिः	जो गभस्तियों (किरणों) के बीच में सूर्यरूप से स्थित हैं

487	सत्त्वस्थ:	जो समस्त प्राणियों में स्थित हैं
488	सिंह:	जो सिंह के समान पराक्रमी हैं
489	भूतमहेश्वर:	भूतों के महान इश्वर हैं
490	आदिदेव:	जो सब भूतों का ग्रहण करते हैं और देव भी हैं
491	महादेव:	जो अपने महान ज्ञानयोग और ऐश्वर्य से महिमान्वित हैं
492	देवेश:	देवों के ईश हैं
493	देवभृद्गुरु:	देंताओं के पालक इन्द्र के भी शासक हैं

mÙkjk xkifrxkIrk KkuxE;% iqjkru% A

'kjhjHkrHk`nHkkäk dihUæk Hkfjnf{k.k% AA ‡… AA

494	उत्तर:	जो संसारबंधन से मुक्त हैं
495	गोपति:	गौओं के पालक
496	गोप्ता	समस्त भूतों के पालक और जगत के रक्षक
497	ज्ञानगम्य:	जो केवल ज्ञान से ही जाने जाते हैं
498	पुरातन:	जो काल से भी पहले रहते हैं
499	शरीरभूतभृत्	शरीर की रचना करने वाले भूतों के पालक
500	भोक्ता	पालन करने वाले
501	कपीन्द्र:	वानरों के स्वामी
502	भूरिदक्षिण:	जिनकी बहुत सी दक्षिणाएँ रहती हैं

d{kk & 5

fVIi.kh

lkeik·eri% lke% i#ftRi#lÙke% A
fou;ks t;% lR;lU/kks nk'kkg% lkRorkEifr% AA ‡† AA

503 सोमपः जो समस्त यज्ञों में देवतारूप से सोमपान करते हैं

504 अमृतपः आत्मारूप अमृतरस का पान करने वाले

505 सोमः चन्द्रमा (सोम) रूप से औषधियों का पोषण करने वाले

506 पुरुजित् पुरु अर्थात बहुतों को जीतने वाले

507 पुरुसत्तमः विश्वरूप अर्थात पुरु और उत्कृष्ट अर्थात सत्तम हैं

508 विनयः दुष्ट प्रजा को विनय अर्थात दंड देने वाले हैं

509 जयः सब भूतों को जीतने वाले हैं

510 सत्यसन्धः जिनकी संधा अर्थात संकल्प सत्य हैं

511 दाशार्हः जो दशार्ह कुल में उत्पन्न हुए

512 सात्त्वतां पतिः सात्वतों (वैष्णवों) के स्वामी

thoks fouf;rk lk{kh eqdqUnk·ferfoØe% A
vEHkkfuf/kjuUrkRek egksnf/k'k;ks·Urd% AA ‡‡ AA

513 जीवः क्षेत्रज्ञरूप से प्राण धारण करने वाले

514 विनयितासाक्षी प्रजा की विनयिता को साक्षात देखने वाले

515 मुकुन्दः मुक्ति देने वाले हैं

516 अमितविक्रमः जिनका विक्रम (शूरवीरता) अतुलित है

517 अम्भोनिधिः जिनमे अम्भ (देवता) रहते हैं

518 अनन्तात्मा जो देश, काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न हैं

519 महोदधिशयः जो महोदधि (समुद्र) में शयन करते हैं

520 अन्तकः भूतों का अंत करने वाले

v tk egkg% LokHkkO;k ftrkfe=% çeknu% A
vkuUnk uUnuk uUn% lR;/kek f=foØe% AA ‡^ AA

521 अजः अजन्मा

522 महार्हः मह (पूजा) के योग्य

523 स्वाभाव्यः नित्यसिद्ध होने के कारण स्वभाव से ही उत्पन्न नहीं होते

524 जितामित्रः जिन्होंने शत्रुओं को जीता है

525 प्रमोदनः जो अपने ध्यानमात्र से ध्यानियों को प्रमुदित करते हैं

526 आनन्दः आनंदस्वरूप

527 नन्दनः आनंदित करने वाले हैं

528 नन्दः सब प्रकार की सिद्धियों से संपन्न

529 सत्यधर्मा जिनके धर्म ज्ञानादि गुण सत्य हैं

530 त्रिविक्रमः जिनके तीन विक्रम (डग) तीनों लोकों में क्रान्त (व्याप्त) हो गए

egf"k% dfiykpk;% —rKk efnuhifr% A
f=infL=n'kk/;{kk egk'k³x% —rkUr—r AA ‡‰ AA

531 महर्षिः कपिलाचार्यः जो ऋषि रूप से उत्पन्न हुए कपिल हैं

532 कृतज्ञः कृत (जगत) और ज्ञ (आत्मा) हैं

533 मेदिनीपतिः मेदिनी (पृथ्वी) के पति

534 त्रिपदः जिनके तीन पद हैं

535 त्रिदशाध्यक्षः जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं के अध्यक्ष

536 महाशृंगः मत्स्य अवतार

537 कृतान्तकृत् कृत (जगत) का अंत करने वाले हैं

egkojkgk xkfoUn% l|"k.k% dudk³xnh A
x|ák xHkhjk xguk x|lr'pØxnk/kj% AA ‡Š AA

538 महावराहः महान हैं और वराह हैं

539 गोविन्दः गो अर्थात वाणी से प्राप्त होने वाले हैं

540 सुषेणः जिनकी पार्षदरूप सुन्दर सेना है

541 कनकांगदी जिनके कनकमय (सोने के) अंगद(भुजबन्द) हैं

542 गुह्यः गुहा यानि हृदयाकाश में छिपे हुए हैं

543 गभीरः जो गंभीर हैं

544 गहनः कठिनता से प्रवेश किये जाने योग्य हैं

545 गुप्तः जो वाणी और मन के अविषय हैं

546 चक्रगदाधरः मन रुपी चक्र और बुद्धि रुपी गदा को लोक रक्षा हेतु धारण करने वाले

o/kk% Lok³xks·ftr% —".kks –<% l³d"kZ.kks·P;qr% A
o#.kks ok#.kks o{k% iq"djk{kks egkeuk% AA ‡‹ AA

547 वेधाः विधान करने वाले हैं

548 स्वांगः कार्य करने में स्वयं ही अंग हैं

549 अजितः अपने अवतारों में किसी से नहीं जीते गए

550 कृष्णः कृष्णद्वैपायन

551 दृढः जिनके स्वरुप सामर्थ्यादि की कभी च्युति नहीं होती

552 संकर्षणोऽच्युतः जो एक साथ ही आकर्षण करते हैं और पद च्युत नहीं होते

553 वरुणः अपनी किरणों का संवरण करने वाले सूर्य हैं

554 वारुणः वरुण के पुत्र वसिष्ठ या अगस्त्य

555 वृक्षः वृक्ष के समान अचल भाव से स्थित

556 पुष्कराक्षः हृदय कमल में चिंतन किये जाते हैं

557 महामनः सृष्टि,स्थिति और अंत ये तीनों कर्म मन से करने वाले

d{kk & 5

fVIi.kh

Hkxoku~ Hkxgk··uUnh ouekyh gyk;q/k% A
vkfnR;ks T;ksfrjkfnR;% lfg".kqxZfr lÙke% AA ^å AA

558	भगवान्	सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य जिनमें है
559	भगहा	संहार के समय ऐश्वर्यादि का हनन करने वाले हैं
560	आनन्दी	सुखस्वरूप
561	वनमाली	वैजयंती नाम की वनमाला धारण करने वाले हैं
562	हलायुधः	जिनका आयुध (शस्त्र) ही हल है
563	आदित्यः	अदिति के गर्भ से उत्पन्न होने वाले
564	ज्योतिरादित्यः	सूर्यमण्डलान्तर्गत ज्योति में स्थित
565	सहिष्णुः	शीतोष्णादि द्वंद्वों को सहन करने वाले
566	गतिसत्तमः	गति हैं और सर्वश्रेष्ठ हैं

lq/kUok [k.Mij'kqnkZ#.kks æfo.kçn% A
fnoLi`d~ lo–X0;klks okpLifrj;ksfut% AA ^f AA

567	सुधन्वा	जिनका इन्द्रियादिमय सुन्दर शारंग धनुष है
568	खण्डपरशुः	जिनका परशु अखंड है
569	दारुणः	सन्मार्ग के विरोधियों के लिए दारुण (कठोर) हैं
570	द्रविणप्रदः	भक्तों को द्रविण (इच्छित धन) देने वाले हैं

571 दिवस्पृक् दिव (स्वर्ग) का स्पर्श करने वाले हैं

572 सर्वदृग्व्यासः सम्पूर्ण ज्ञानों का विस्तार करने वाले हैं

573 वाचस्पतिरयोनिजः विद्या के पति और जननी से जन्म न लेने वाले हैं

f=lkek lkex% lke fuokZ.k Hks"kt% fHk"kd~ A
lU;kl—PNe% 'kkUrks fu"Bk 'kkfUr% ijk;.ke~ AA ^„ AA

574 त्रिसामा तीन सामों द्वारा सामगान करने वालों से स्तुति किये जाने वाले हैं

575 सामगः सामगान करने वाले हैं

576 साम सामवेद

577 निर्वाणम् परमानंदस्वरूप ब्रह्म

578 भेषजम् संसार रूप रोग की औषध

579 भृषक् संसाररूप रोग से छुड़ाने वाली विद्या का उपदेश देने वाले हैं

580 संन्यासकृत् मोक्ष के लिए संन्यास की रचना करने वाले हैं

581 समः सन्यासियों को ज्ञान के साधन शम का उपदेश देने वाले

582 शान्तः विषयसुखों में अनासक्त रहने वाले

583 निष्ठा प्रलयकाल में प्राणी सर्वथा जिनमे वास करते हैं

584 शान्तिः सम्पूर्ण अविद्या की निवृत्ति

585 परायणम् — पुनरावृत्ति की शंका से रहित परम उत्कृष्ट स्थान हैं

'kHkk³xks 'kkfUrn% lz"Vk dqen% doys'k;% A
xksfgrks xksifrxksIrk o"kHkk{kks o"kfç;% AA ^… AA

586 शुभांगः — सुन्दर शरीर धारण करने वाले हैं

587 शान्तिदः — शान्ति देने वाले हैं

588 स्रष्टा — आरम्भ में सब भूतों को रचने वाले हैं

589 कुमुदः — कु अर्थात पृथ्वी में मुदित होने वाले हैं

590 कुवलेशयः — कु अर्थात पृथ्वी के वलन करने से जल कुवल कहलाता है उसमे शयन करने वाले हैं

591 गोहितः — गौओं के हितकारी हैं

592 गोपतिः — गो अर्थात भूमि के पति हैं

593 गोप्ता — जगत के रक्षक हैं

594 वृषभाक्षः — वृष अर्थात धर्म जिनकी दृष्टि है

595 वृषप्रियः — जिन्हे वृष अर्थात धर्म प्रिय है

vfuorhZ fuoÙkkRek l³{kIrk {ke—fPNo% A
JhoRlo{kk% Jhokl% Jhifr% Jherkoj% AA ^† AA

596 अनिवर्ती — देवासुरसंग्राम से पीछे न हटने वाले हैं

597	निवृतात्मा	जिनकी आत्मा स्वभाव से ही विषयों से निवृत्त है
598	संक्षेप्ता	संहार के समय विस्तृत जगत को सूक्ष्मरूप से संक्षिप्त करने वाले हैं
599	क्षेमकृत्	प्राप्त हुए पदार्थ की रक्षा करने वाले हैं
600	शिवः	अपने नामस्मरणमात्र से पवित्र करने वाले हैं
601	श्रीवत्सवक्षाः	जिनके वक्षस्थल में श्रीवत्स नामक चिन्ह है
602	श्रीवासः	जिनके वक्षस्थल में कभी नष्ट न होने वाली श्री वास करती हैं
603	श्रीपतिः	श्री के पति
604	श्रीमतां वरः	ब्रह्मादि श्रीमानों में प्रधान हैं

Jhn% Jh'k% Jhfuokl% Jhfuf/k% JhfoHkkou% A

Jh/kj% Jhdj% J;% JhekYYkd=;kJ;% AA ^‡ AA

605	श्रीदः	भक्तों को श्री देते हैं इसलिए श्रीद हैं
606	श्रीशः	जो श्री के ईश हैं
607	श्रीनिवासः	जो श्रीमानों में निवास करते हैं
608	श्रीनिधिः	जिनमे सम्पूर्ण श्रियां एकत्रित हैं
609	श्रीविभावनः	जो समस्त भूतों को विविध प्रकार की श्रियां देते हैं
610	श्रीधरः	जिन्होंने श्री को छाती में धारण किया हुआ हैं

611 श्रीकरः भक्तों को श्रीयुक्त करने वाले हैं

612 श्रेयः जिनका स्वरुप कभी न नष्ट होने वाले सुख को प्राप्त कराता है

613 श्रीमान् जिनमे श्रियां हैं

614 लोकत्रयाश्रयः जो तीनों लोकों के आश्रय हैं

Lo{k% Lo³x% 'krkuUnk ufUn t ;kfrx.k'oj% A

fof t rkRek·fo/k;kRek lRdhfrf'NUu l'k;% AA^^AA

615 स्वक्षः जिनकी आँखें कमल के समान सुन्दर हैं

616 स्वङ्गः जिनके अंग सुन्दर हैं

617 शतानन्दः जो परमानंद स्वरुप उपाधि भेद से सैंकड़ों प्रकार के हो जाते हैं

618 नन्दिः परमानन्दस्वरूप

619 ज्योतिर्गणेश्वरः ज्योतिर्गणों के इश्वर

620 विजितात्मा जन्होंने आत्मा अर्थात मन को जीत लिया है

621 विधेयात्मा जिनका स्वरुप किसीके द्वारा विधिरूप से नहीं कहा जा सकता

622 सत्कीर्तिः जिनकी कीर्ति सत्य है

623 छिन्नसंशयः जिन्हे कोई संशय नहीं है

mnh.k% lokr'p{kjuh'k% 'kk'orfLFkj% A
Hkw'k;ks Hkw"k.kks HkwfrfoZ'kksd% 'kksduk'ku% AA ^‰ AA

624 उदीर्णः — जो सब प्राणीओं से उत्तीर्ण है

625 सर्वतश्चक्षुः — जो अपने चौतन्यरूप से सबको देखते हैं

626 अनीशः — जिनका कोई ईश नहीं है

627 शाश्वतः—स्थिरः जो नित्य होने पर भी कभी विकार को प्राप्त नहीं होते

628 भूशयः — लंका जाते समय समुद्रतट पर भूमि पर सोये थे

629 भूषणः — जो अपने अवतारों से पृथ्वी को भूषित करते रहे हैं

630 भूतिः — समस्त विभूतियों के कारण हैं

631 विशोकः — जो शोक से परे हैं

632 शोकनाशनः — जो स्मरणमात्र से भक्तों का शोक नष्ट कर दे

vfpZ"ekufpZr% dqEHkks fo'kq)kRek fo'kks/ku% A
vfu#)ks·çfrjFk% ç|qEuks·ferfoØe% AA ^Š AA

633 अर्चिष्मान् — जिनकी अर्चियों (किरणों) से सूर्य, चन्द्रादि अर्चिष्मान हो रहे हैं

63 अर्चितः — जो सम्पूर्ण लोकों से अर्चित (पूजित) हैं

635 कुम्भः — कुम्भ(घड़े) के समान जिनमे सब वस्तुएं स्थित हैं

636	विशुद्धात्मा	तीनों गुणों से अतीत होने के कारण विशुद्ध आत्मा हैं
637	विशोधनः	अपने स्मरण मात्र से पापों का नाश करने वाले हैं
638	अनिरुद्धः	शत्रुओं द्वारा कभी रोके न जाने वाले
639	अप्रतिरथः	जिनका कोई विरुद्ध पक्ष नहीं है
640	प्रद्युम्नः	जिनका दयुम्न (धन) श्रेष्ठ है
641	अमितविक्रमः	जिनका विक्रम अपरिमित है

dkyusfefugk ohj% 'kkSfj% 'kwj tu'oj% A
f=ykdkRek f=ykd'k% d'ko% df'kgk gfj% AA ^‹ AA

642	कालनेमीनिहा	: कालनेमि नामक असुर का हनन करने वाले
643	वीरः	जो शूर हैं
644	शौरी	जो शूरकुल में उत्पन्न हुए हैं
645	शूरजनेश्वरः	इंद्र आदि शूरवीरों के भी शासक
646	त्रिलोकात्मा	तीनों लोकों की आत्मा हैं
647	त्रिलोकेशः	जिनकी आज्ञा से तीनों लोक अपना कार्य करते हैं
648	केशवः	ब्रह्मा,विष्णु और शिव नाम की शक्तियां केश हैं उनसे युक्त होने वाले
649	केशिहा	केशी नामक असुर को मारने वाले
650	हरिः	अविद्यारूप कारण सहित संसार को हर लेते हैं

dkeno% dkeiky% dkeh dkUr% —rkxe% A
vfunZ';oiqfoZ".kqohZjks·uUrks /ku¥t ;% AA %‰å AA

650	हरिः	अविद्यारूप कारण सहित संसार को हर लेते हैं
651	कामदेवः	कामना किये जाते हैं इसलिए काम हैं और देव भी हैं
652	कामपालः	कामियों की कामनाओं का पालन करने वाले हैं
653	कामी	पूर्णकाम हैं
654	कान्तः	परम सुन्दर देह वाले हैं
655	कृतागमः	जिन्होंने श्रुति,स्मृति आदि आगम(शास्त्र) रचे हैं
656	अनिर्देश्यवपुः	जिनका रूप निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता
657	विष्णुः	जिनकी प्रचुर कांति पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके स्थित है
658	वीरः	गति आदि से युक्त हैं
659	अनन्तः	देश, काल, वस्तु, सर्वात्मा आदि से अपरिच्छिन्न
660	धनञ्जयः	अर्जुन के रूप में जिन्होंने दिग्विजय के समय बहुत सा धन जीता था

cã.;ks cã—n cãk cã cãfoo/ku% A
cãfon czkã.kks cãh cãKks czkã.kfç;% AA %‰f AA

661	ब्रह्मण्यः	जो तप,वेद,ब्राह्मण और ज्ञान के हितकारी हैं

662 ब्रह्मकृत तपादि के करने वाले हैं

663 ब्रह्मा ब्रह्मरूप से सबकी रचना करने वाले हैं

664 ब्रहम बड़े तथा बढ़ानेवाले हैं

665 ब्रह्मविवर्धनः तपादि को बढ़ाने वाले हैं

666 ब्रह्मविद् वेद तथा वेद के अर्थ को यथावत जानने वाले हैं

667 ब्राह्मणः ब्राह्मण रूप

668 ब्रह्मी ब्रह्म के शेषभूत जिनमे हैं

669 ब्रह्मज्ञः जो अपने आत्मभूत वेदों को जानते हैं

670 ब्राह्मणप्रियः जो ब्राह्मणों को प्रिय हैं

egkØek egkdekZ egkrstk egkjx% A
egkØrqeZgk;Tok egk;Kks egkgfo% AA ‰„ AA

670 ब्राह्मणप्रियः जो ब्राह्मणों को प्रिय हैं

671 महाक्रमः जिनका डग महान है

672 महाकर्मा जगत की उत्पत्ति जैसे जिनके कर्म महान हैं

673 महातेजा जिनका तेज महान है

674 महोरगः जो महान उरग (वासुकि सर्परूप) है

675 महाक्रतुः जो महान क्रतु (यज्ञ) है

676 महायज्वा महान हैं और लोक संग्रह के लिए यज्ञानुष्ठान करने से यज्वा भी हैं

677 महायज्ञः महान हैं और यज्ञ हैं

678 महाहविः महान हैं और हवि हैं

Lr0;% Lrofç;% Lrks=a Lrqfr% Lrksrk j.kfç;% A
iw.k% iwjf;rk iq.;% iq.;dhfrZjuke;% AA %0... AA

679 स्तव्यः जिनकी सब स्तुति करते हैं लेकिन स्वयं किसीकी स्तुति नहीं करते

680 स्तवप्रियः जिनकी सभी स्तुति करते हैं

681 स्तोत्रम् वह गुण कीर्तन हैं जिससे उन्ही की स्तुति की जाती है

682 स्तुतिः स्तवन क्रिया

683 स्तोता सर्वरूप होने के कारण स्तुति करने वाले भी स्वयं हैं

684 रणप्रियः जिन्हे रण प्रिय है

685 पूर्णः जो समस्त कामनाओं और शक्तियों से संपन्न हैं

686 पूरयिता जो केवल पूर्ण ही नहीं हैं बल्कि सबको संपत्ति से पूर्ण करने भी वाले हैं

687 पुण्यः स्मरण मात्र से पापों का क्षय करने वाले हैं

688 पुण्यकीर्तिः जिनकी कीर्ति मनुष्यों को पुण्य प्रदान करने वाली है

689 अनामयः जो व्याधियों से पीड़ित नहीं होते

euktoLrhFkdjks olqjrk olqçn% A
olqçnks oklqnsoks olqolqeuk gfo% AA %† AA

690 मनोजवः जिनका मन वेग समान तीव्र है

691 तीर्थकरः जो चौदह विद्याओं और वेद विद्याओं के कर्ता तथा वक्ता हैं

692 वसुरेताः स्वर्ण जिनका वीर्य है

693 वसुप्रदः जो खुले हाथ से धन देते हैं

694 वसुप्रदः जो भक्तों को मोक्षरूप उत्कृष्ट फल देते हैं

695 वासुदेवः वासुदेवजी के पुत्र

696 वसुः जिनमे सब भूत बसते हैं

697 वसुमना जो समस्त पदार्थों में सामान्य भाव से बसते हैं

698 हविः जो ब्रह्म को अर्पण किया जाता है

lnxfr% lR—fr% lÙkk lnHkwfr% lRijk;.k% A
'kwjlsuks ;nqJs"B% lfUuokl% l;kequ% AA %‡ AA

699 सद्गतिः जिनकी गति यानी बुद्धि श्रेष्ठ है

700 सत्कृतिः जिनकी जगत की उत्पत्ति आदि कृति श्रेष्ठ है

701 सत्ता सजातीय, विजातीय भेद से रहित अनुभूति हैं

702 सद्भूतिः जो अबाधित और बहुत प्रकार से भासित हैं

703 सत्परायणः सत्पुरुषों के श्रेष्ठ स्थान हैं

704 शूरसेनः — जिनकी सेना शूरवीर है और हनुमान जैसे शूरवीर उनकी सेना में हैं

705 यदुश्रेष्ठः — यदुवंशियों में प्रधान हैं

706 सन्निवासः — विद्वानों के आश्रय है

707 सुयामुनः — जिनके यामुन अर्थात यमुना सम्बन्धी सुन्दर हैं

ikBxr iz'u& 16-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. उत्तरो .... ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
2. सोमपोऽमृतपः .... पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
3. जीवो .... साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
4. महर्षिः कपिलाचार्यः .... मेदिनीपतिः ।
5. महावराहो .... सुषेणः कनकाङ्गदी ।
6. वेधाः स्वाङ्गोऽजितः .... दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।
7. भगवान् भगहाऽऽनन्दी .... हलायुधः ।
8. .... खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।

9. त्रिसामा सामगः साम .... भेषजं भिषक् ।

10. शुभाङ्गः शान्तिदः .... कुमुदः कुवलेशयः ।

11. अनिवर्ती .... सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।

vkiu D;k lh[kk

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण करना।
- श्लोकों का अर्थज्ञान।
- भगवान विष्णु की विशेषताए।

ikBkr iz'u

1. नीचे दिये गये पदों पर अर्थ लिखिए–

    a) ज्ञानगम्यः

    b) मेदिनीपतिः

    c) कनकाङ्गदी

    d) हलायुधः

    e) शुभाङ्गः

    f) अनिवर्ती

mÙkjekyk

16.1

(1)

1. गोपतिर्गोप्ता
2. सोमः
3. विनयिता
4. कृतज्ञो
5. गोविन्दः
6. कृष्णो
7. वनमाली
8. सुधन्वा
9. निर्वाणं
10. स्रष्टा
11. निवृत्तात्मा